भाषा, लिपि और व्याकरण

LANGUAGE, SCRIPT AND GRAMMAR

1

बच्चो! हमारे मन में सदा तरह-तरह के विचार आते रहते हैं। इन विचारों को हम बोलकर प्रकट करते हैं। कभी-कभी हम अपनी बात इशारों या संकेतों से भी स्पष्ट करते हैं। अभ्यास के साथ-साथ ये संकेत देखते ही हम उनका अर्थ समझ जाते हैं।

आपने देखा होगा कि कक्षा में अध्यापिका जैसे ही अपने होंठ पर उँगली रखकर कक्षा की ओर संकेत करती हैं, तो कक्षा के सभी छात्र समझ जाते हैं कि उन्हें चुप रहने का निर्देश दिया जा रहा है।

पशु-पक्षी तरह-तरह की आवाज़ें करके अपनी बात अपने साथियों से कहते हैं। हम भी मुँह से तरह-तरह की आवाज़ें निकालते हैं। ये सब ध्वनियाँ भाषा में नहीं आती हैं। जब कोई व्यक्ति अपने मन के विचार बोलकर या लिखकर प्रकट करता है, उसे भाषा कहते हैं। कहा जा सकता है कि वे ध्वनियाँ जिनका कोई निश्चित अर्थ हो तथा वे दूसरों तक हमारी बात पहुँचा रही हों, उसे भाषा कहते हैं। अतः

मन के भाव बोलकर या लिखकर प्रकट करने का साधन **भाषा** है।

इस प्रकार भाषा के निम्न दो रूप हैं –

भाषा

मौखिक (Oral) | लिखित (Written)

जब मन की बात बोलकर कही जाए, उसे मौखिक भाषा कहते हैं ।

जब मन की बात लिखकर कही जाए, उसे लिखित भाषा कहते हैं ।

मौखिक भाषा – संसारभर के लोग अपनी वाणी द्वारा अपने विचार प्रकट करते हैं । विश्व में रूसी, अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दू, चीनी आदि अनेक भाषाएँ प्रयोग की जाती हैं । भारत में भी हिंदी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बंगला, कश्मीरी, संस्कृत, सिंधी आदि अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं । हिंदी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है ।

लिखित भाषा – मानव ने भाषा को तरह-तरह से लिखकर स्थाई रूप प्रदान किया है ।

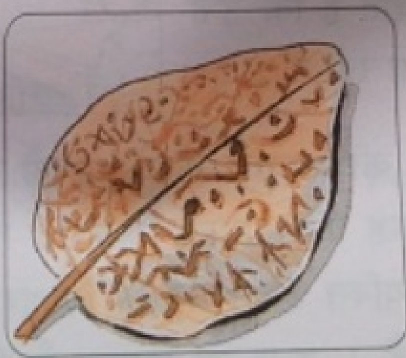

भाषा के लिखित रूप से विचारों को संगृहीत किया जा सकता है तथा उन्हें दूर-दराज़ तक भेजा जा सकता है । सभी कार्यालयों में लिखित या टंकित भाषा का प्रयोग किया जाता है ।

लिपि (Script) – भाषा के लिखित रूप के लिए लिपि की आवश्यकता होती है । प्रत्येक भाषा में हर ध्वनि के लिए निश्चित चिह्न होता है, उसे लिखने की विधि को लिपि कहा जाता है । अत:

भाषा लिखने की विधि **लिपि** कहलाती है ।

हिंदी तथा संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं । अंग्रेज़ी तथा अन्य यूरोपीय भाषाएँ रोमन लिपि में लिखी जाती हैं । उर्दू को फ़ारसी लिपि में लिखा जाता है । जैसे –

भाषा	लिपि	उदाहरण
हिंदी	देवनागरी	भारत मेरा देश है ।
अंग्रेज़ी	रोमन	INDIA IS MY COUNTRY
उर्दू	फ़ारसी	بھارت مرا وطن ہے
पंजाबी	गुरुमुखी	ਭਾਰਤ ਮੇਰਾ ਦੇਸ਼ ਹੈ

बोली (Dialect) – भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहा जाता है । भाषा का क्षेत्र बड़ा होता है परंतु बोली प्रांत से प्रांत, गाँव से गाँव बदलती जाती है । उसका क्षेत्र सीमित होता है । भाषाओं में साहित्य रचना होती है जो लिखित रूप में भी उपलब्ध होती है परंतु बोलियों का साहित्य लिखित न होकर मौखिक ही रह जाता है । हर बोली में लोकगाथाएँ व लोकगीत होते हैं, जो कहे, सुने व गाए जाते हैं ।

हिंदी की बोलियाँ – पूर्वी हिंदी, पश्चिमी हिंदी, मगधी हिंदी, पहाड़ी हिंदी, राजस्थानी हिंदी आदि ।

व्याकरण (Grammar) – किसी भी भाषा के अशुद्ध उच्चारण या लेखन से उसका अर्थ बदल जाता है । अशुद्धता से बचने के लिए हर भाषा में नियम बनाए गए हैं । ये नियम भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान देते हैं । इससे शब्द, अर्थ, वाक्य तथा उनके प्रयोग पर नियंत्रण रहता है तथा भाषा का शुद्ध रूप प्रयोग में लाया जा सकता है ।

कहा जा सकता है कि -

भाषा के नियमों की जानकारी देने वाला शास्त्र **व्याकरण** है ।

व्याकरण में भाषा के शुद्ध रूप की जानकारी दी जाती है । उदाहरण के लिए यदि कहा जाए कि **'आज पाठशाला खुला था'** तो यह वाक्य सही नहीं माना जाएगा क्योंकि यहाँ क्रिया शब्दों के सही रूप का प्रयोग नहीं किया गया । यह वाक्य इस प्रकार होना चाहिए - **'आज पाठशाला खुली थी'** । अतः शब्दों के शुद्ध रूप की जानकारी के लिए व्याकरण ही एकमात्र उपयोगी साधन है ।

व्याकरण के ज्ञान के बिना भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान नहीं हो सकता । अतः किसी भी भाषा की रचना को समझने के लिए व्याकरण ज्ञान आवश्यक है । इससे भाषा का मानक रूप प्रयोग में लाया जा सकता है । मानक रूप का अर्थ है- 'भाषा के शुद्ध एकरूप का प्रयोग ।' भाषा को उपयोगी बनाने के लिए उसकी एकरूपता अत्यंत आवश्यक है और यह कार्य व्याकरण के नियमों के आधार पर ही संभव है ।

व्याकरण के मुख्य भेद

वर्ण भाषा की वह मौखिक इकाई है जिसके और अधिक टुकड़े नहीं किए जा सकते । कुछ वर्णों या कभी-कभी एक ही वर्ण से बनता है - शब्द । कुछ शब्दों के मेल से बनता है - वाक्य । इसी दृष्टि के आधार पर व्याकरण भाषा के निम्नलिखित अंगों पर विचार करता है -

व्याकरण

- वर्ण विचार
- शब्द विचार
- वाक्य विचार

व्याकरण में वर्ण, शब्द तथा वाक्य के आकार, भेद, रूप, बनावट तथा प्रयोग पर विचार किया जाता है ।

वर्ण - विचार

PHONOLOGY

2

पेड़

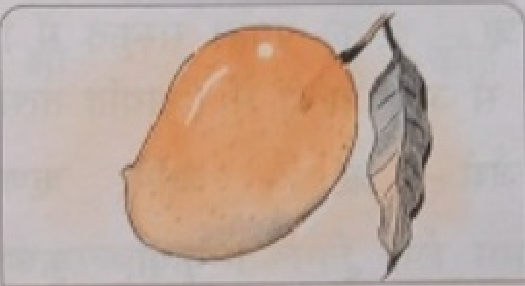

आम

ऊपर बने चित्रों को देखकर जब हम उनके नाम पढ़ते हैं तथा उनका उच्चारण करते हैं तो हमारे मुख से कुछ ध्वनियाँ निकलती हैं जो क्रमशः इस प्रकार हैं -

पेड़ = प् + ए + ड् + अ

आम = आ + म् + अ

इन ध्वनियों के परस्पर मेल से ही शब्द का निर्माण होता है । अर्थात शब्द कई ध्वनियों के मेल से बनता है । किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि कहलाती है ।

वर्ण (Alphabet) - भाषा में प्रयुक्त होने वाली वह ध्वनि तथा ध्वनि चिह्न जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है । जैसे - क्, ख्, ग्, घ्, अ आदि । वर्णों के समूह को वर्णमाला कहा जाता है ।

वर्ण के भेद हिंदी भाषा में वर्ण के दो भेद होते हैं –

1. **स्वर** (Vowels)
2. **व्यंजन** (Consonants)

स्वर (Vowels) – जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है वे स्वर कहलाते हैं । इनके उच्चारण में हवा मुँह के किसी भी भाग से नहीं टकराती। ये ग्यारह होते हैं ।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ

ऋ – इसका प्रयोग संस्कृत में किया जाता है । हिंदी में भी इसका प्रयोग संस्कृत से आए शब्दों में (अर्थात तत्सम शब्दों में) होता है ।

जैसे – **ऋ** – ऋषि, ऋण, ऋतु आदि ।

ृ – कृपा, कृष्ण, दृश्य, सृष्टि आदि ।

अं तथा अः – इन दोनों का स्वरों की तरह स्वतंत्र उच्चारण नहीं होता। इनका प्रयोग व्यंजनों के साथ होता है । इन्हें न तो पूरी तरह स्वर कहा जा सकता है न व्यंजन । इसलिए इन्हें अयोगवाह (After Sound) कहा जाता है ।

अं इसे अनुस्वार (Nasal) कहते हैं । अनुस्वार का उच्चारण केवल नासिका से होता है । यह व्यंजनों के पाँचों वर्गों के अंतिम वर्ण के स्थान पर आता है तब इसका रूप (ं) होता है ।

अः इसे इस प्रकार प्रयोग किया जाता है । जैसे – अतः, प्रातः आदि इसे विसर्ग कहते हैं ।। (:) विसर्ग का उच्चारण 'ह्' के समान होता है

ऑ यह स्वर केवल अंग्रेज़ी के शब्दों में ही आता है । जैसे – डॉक्टर कॉफी, बॉल आदि । इसे आगत स्वर कहते हैं ।

मात्रा (Sign) – हर स्वर का व्यंजन के साथ मिला हुआ रूप उसकी मात्रा कहलाता है ।

स्वर और उनकी मात्राएँ

स्वर	मात्रा	शब्द
अ	कोई मात्रा नहीं	कल
आ	ा	कार
इ	ि	किस
ई	ी	कील
उ	ु	कुछ
ऊ	ू	कूद

स्वर	मात्रा	शब्द
ऋ	ृ	कृष्ण
ए	े	केला
ऐ	ै	कैद
ओ	ो	कोयल
औ	ौ	कौन

स्वर के भेद – स्वर के भेदों को उनके उच्चारण में लगने वाले समय के अनुसार निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा गया है –

1. **ह्रस्व** 2. **दीर्घ** 3. **प्लुत**

1. **ह्रस्व स्वर** (Short Vowels) – जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं ।
   ये चार हैं – **अ, इ, उ** तथा **ऋ** ।
2. **दीर्घ स्वर** (Long Vowels) – जिन्हें बोलने में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं ।
   ये कुल सात हैं – **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ** तथा **औ** ।
3. **प्लुत स्वर** (Longer Vowel) – जिस स्वर के उच्चारण में सबसे अधिक समय लगता है, उसे प्लुत स्वर कहते हैं । यह केवल एक है । इसका प्रयोग संस्कृत में किया जाता है । इसका चिह्न '३' है । प्लुत स्वर युक्त शब्द का उदाहरण है – ओ३म् ।

मात्रा प्रयोग से शब्दों का अर्थ बदल जाता है।

ह्रस्व स्वर युक्त शब्द	दीर्घ स्वर युक्त शब्द
वह	वाह !
कल	काल, काला, काली
जल	जाल, जाला, जाली
मल	माल, माला, माली
पल	पाल, पीला, पोल
टल	टाल, टीला

व्यंजन (Consonants) – जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से नहीं हो तथा जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजनों को स्वर रहित रूप में हलंत (्) लगाकर लिखा जाता है।

जैसे - **क्, ख्; ग्, घ्, ङ्** आदि।

पर इनका उच्चारण इस रूप में नहीं किया जा सकता। इनके उच्चारण समय इनका (क् + अ = **क**, ख् + अ = **ख**) यह रूप सामने आता है। क जा सकता है कि व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से ही किया जा सक है। सभी व्यंजनों में 'अ' स्वर मिला होता है।

हलंत : स्वर रहित वर्ण के नीचे लगी टेढ़ी रेखा हलंत (्) कहलाती है

व्यंजन माला

स्पर्श व्यंजन	**कवर्ग**	क	ख	ग	घ	ङ		
	चवर्ग	च	छ	ज	झ	ञ		
	टवर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
	तवर्ग	त	थ	द	ध	न		
	पवर्ग	प	फ	ब	भ	म		
अंतःस्थ			य	र	ल	व		
ऊष्म			श	ष	स	ह		
संयुक्त व्यंजन			क्ष	त्र	ज्ञ	श्र		

16

व्यंजनों के प्रकार उच्चारण की दृष्टि से व्यंजनों के चार प्रकार माने गए हैं -

1. **स्पर्श** 2. **अंतःस्थ** 3. **ऊष्म** 4. **संयुक्त**

1. **स्पर्श** (Mutes) - स्पर्श व्यंजनों में जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों को छूती है । इसलिए इन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं । कवर्ग से पवर्ग तक स्पर्श व्यंजन हैं ।
2. **अंतःस्थ** (Semi Consonants) - स्वर और व्यंजन के बीच में स्थित होने के कारण इन्हें अंतःस्थ कहते हैं अर्थात इनके उच्चारण में जीभ किसी विशेष भाग को नहीं छूती । ये चार हैं - **य**, **र**, **ल** तथा **व** ।
3. **ऊष्म** (Sibilants) - इनके उच्चारण में साँस तेज़ी से निकलती है और ऊष्मा (गरमी) पैदा होती है । इसलिए ये ऊष्म हैं । ये चार हैं - **श**, **ष**, **स** तथा **ह** ।
4. **संयुक्त** (Joint Consonants) - ये दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं -

क् + ष = **क्ष**	त् + र = **त्र**
ज् + ञ = **ज्ञ**	श् + र = **श्र**

क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र संयुक्त व्यंजन हैं ।

अनुनासिक (Semi Nasal) - इनके उच्चारण में वायु मुख और नासिका दोनों से निकलती है । इसका चिह्न (ँ) होता है । अनुनासिक का उच्चारण सभी स्वरों के साथ होता है ।

जैसे- चाँदी, साँप, आँख आदि ।

कभी-कभी मात्रा वाले शब्दों में अनुनासिक के स्थान पर स्थान की कमी के कारण अनुस्वार (ं) लगाया जाता है ।

जैसे - 'मैँ' - 'मैं', 'हैँ' - 'हैं' आदि ।

कहीं-कहीं अनुस्वार और अनुनासिक के प्रयोग से शब्द ही बदल जाता है ।

जैसे- हंस (एक पक्षी)

हँस (हँसना एक क्रिया)

संयुक्ताक्षर व उनके लिखने की विधि

एक से अधिक व्यंजन जब जोड़कर लिखे या बोले जाते हैं तो वे क्रमशः संयुक्ताक्षर कहलाते हैं। जैसे- पक्का, बच्चा, चक्की, ध्यान, विद्या आदि। इनमें पहला व्यंजन अरहित और दूसरा व्यंजन असहित होता है।

संयुक्ताक्षर निम्न प्रकार से लिखे जा सकते हैं-

1. **पाई हटाकर (ा)** - यदि पाई है तो उसे बिना पाई के लिखकर जैसे- अच्छा, सच्चा, विश्व आदि।
2. **हलंत (्) लगाकर** - बिना पाई वाले व्यंजनों को हलंत (्) लगाकर उनका अरहित रूप लिखा जाता है। जैसे- बुद्धि, विद्या आदि।
3. **घुंडी हटाकर** - 'क', 'फ' जैसे वर्णों के अंत का लटका हुआ गोल हिस्सा हटाकर। जैसे- चक्की, सिक्का, दफ्तर आदि।

'र' के विभिन्न रूप

विद्यार्थी अधिकतर 'र' के प्रयोग में अशुद्धियाँ करते हैं।

'र' के प्रयोग में निम्न बातें ध्यान देने योग्य हैं-

- यदि 'र' अपने स्वर सहित रूप में है तथा इसके पहले का व्यंजन आधा (स्वर रहित) है तो यह उसके नीचे इस तरह (्र) लगता है। जैसे- प्रेम, प्रकाश, राष्ट्र आदि। प्रेम शब्द में आया 'प्र' (प् + र) का मिश्रित रूप है। इसी प्रकार राष्ट्र में आया ट्र (ट्+र) का मिश्रित रूप है। यहाँ ट में एक हलंत (्) है तथा इसमें 'र' इस रूप (्र) में जुड़ा है।
- यदि 'र' स्वर रहित है तो यह जहाँ भी आएगा अर्थात जहाँ भी इसका उच्चारण किया जाएगा उसके अगले वर्ण के शीर्ष पर इसे इस तरह (र्‍) लगाया जाएगा। जैसे- धर्म, दर्द, पर्व आदि।

- 'श्' के साथ 'र' का प्रयोग इस रूप में होता है-

  श् + र = श्र

  जैसे- श्रम, श्रीमान, श्रमिक, श्रद्धा आदि ।
- 'स्' के साथ 'र' का प्रयोग इस प्रकार होता है-

  स् + र = स्र (यहाँ पर स्र = स + र (्र) है ।)

  जैसे- स्रोत, सहस्र आदि ।
- संयुक्त व्यंजन 'त्र' = त् + र के योग से बना है । स् + त्र को 'स्त्र' रूप में लिखा जाता है । जैसे- वस्त्र, शस्त्र आदि ।

वर्ण-विच्छेद

वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं । किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करने को वर्ण-विच्छेद कहते हैं ।

जैसे- **बादल** - ब् + आ + द् + अ + ल् + अ

सामाजिक - स् + आ + म् + आ + ज् + इ + क् + अ

वर्णों का उच्चारण

भाषा में वर्णों के सही उच्चारण का महत्त्वपूर्ण स्थान है । उच्चारण में निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए-

- प्रत्येक वर्ग के अंत में आए अक्षर पंचम वर्ण कहलाते हैं । जैसे- **ङ, ञ, ण, न** तथा **म** । जब शब्दों में इनके स्थान पर यदि अनुस्वार लगाया जाता है तो इनका उच्चारण उनके वर्ग के पाँचवें वर्ण के अनुसार किया जाता है क्योंकि पाणिनी ऋषि (व्याकरण के जन्मदाता) के अनुसार इन पाँचों नासिक्य व्यंजनों का संयोग अपने वर्ग के वर्ण के साथ होता है । अतः- गंगा में 'ङ्' का उच्चारण होगा 'न्' का नहीं । इसी प्रकार दंड में 'ण्' का, बंधन में 'न्' का तथा संभव में 'म्' का उच्चारण होगा ।
- अनुस्वार और अनुनासिक के उच्चारण में यदि ध्यान न रखा जाए तो 'हँस' (क्रिया शब्द) अर्थात (हँसना) का 'हंस' (पक्षी) बन जाएगा ।

- ड़ तथा ढ़ का उच्चारण ड तथा ढ से भिन्न होना चाहिए । यदि 'बड़ा' को 'बडा' पढ़ा जाए या 'बढ़ा' पढ़ा जाए तो उसका अर्थ ही बदल जाएगा । इन वर्णों की ध्वनियों के उच्चारण में अंतर को समझकर ही शब्द में इनका उचित प्रयोग करना चाहिए । ड़ तथा ढ़ शब्द के प्रारंभ में नहीं आते हैं । निम्न शब्दों का उच्चारण कर इन वर्णों के प्रयोग का अंतर समझो -

  ड - डर, डमरू, डरपोक, डाक, डाकू, डाल, डिब्बा

  ड़ - सड़क, लड़की, खिड़की, तड़पना, घोड़ा, घड़ा, बड़ा, तोड़ना

  ढ - ढकना, ढाबा, ढील, ढोलक, ढेर

  ढ़ - चढ़ना, पढ़ना, गाढ़ना, दृढ़, गढ़, बढ़ई, बुढ़िया

- उर्दू से आए शब्दों में क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ के नीचे एक बिंदु लगती है, इसी प्रकार अंग्रेज़ी के कुछ शब्द जैसे - फ़ेल, ज़ीरो आदि में भी यह बिंदु लगती है । इस बिंदु को 'नुक्ता' कहते हैं । इसका उच्चारण भी भिन्न होता है । आजकल उर्दू से आए अधिकांश शब्दों का हिंदीकरण मानक हो गया है फिर भी 'ज' और 'फ' में नीचे बिंदु लगती है । जैसे - कागज़, ज़ोर (उर्दू), फ़ेल, ज़ीरो (अंग्रेज़ी)। फ़ का उच्चारण फ से भिन्न होना चाहिए । 'फ' को बोलते समय दोनों होंठ छूते हैं पर फ़ को बोलते समय नहीं । फूल शब्द को यदि फ़ूल कहा जाए तो उसका अर्थ बदल जाएगा । फूल (हिंदी) का अर्थ है - पुष्प, सुमन । यदि इसी के फ को फ़ कहकर उच्चारित किया जाएगा तो वह अंग्रेज़ी का शब्द फ़ूल होगा । जिसका अर्थ है - मूर्ख । अशुद्ध उच्चारण से शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं ।

- श, ष तथा स का स्पष्ट उच्चारण आवश्यक है । कुछ हिंदी प्रदेशों में 'श' और 'ष' के स्थान पर 'स' का ही प्रयोग किया जाता है । 'सुषमा' को 'सुसमा' और 'शीश' को 'सीस' उच्चारित किया जाता है ।

- 'छ' तथा 'क्ष' के उच्चारण में अंतर रखना चाहिए तथा क्षमा, परीक्षा, शिक्षा आदि को छमा, परीछा, शिछा नहीं बोलना चाहिए ।